द्वितीय दीक्षान्त समारोह

सोमवार, 02 फरवरी, 2015

Second Convocation

Monday, 2nd February 2015

Convocation Address

By

Dr. Vishwa Mohan Katoch
Secretary, Department of Health Research &
Director General, ICMR

राजस्थान स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय, जयपुर
RAJASTHAN UNIVERSITY OF HEALTH SCIENCES, JAIPUR

दीक्षान्त सम्बोधन

डॉ. विश्व मोहन कटोच

एम डी, एफ एन ए एस सी, एफ आई ए एस सी, एफ ए एम एस, एफ एन ए

सचिव, भारत सरकार

(स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग)

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय एवं

महानिदेशक

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

वी. रामलिंगस्वामी भवन, अंसारी नगर

नई दिल्ली- 110029

राजस्थान के सम्माननीय राज्यपाल एवं राजस्थान यूनिवर्सिटी ऑफ हेल्थ साइंसेज के चांसलर, माननीय श्री राजेन्द्र राठौड़, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री, कुलपति, सभी आमंत्रित गणमान्य विभूतियां, प्रशासक, शिक्षक एवं अन्य सभी आदरणीय सहयोगीगण एवं प्रिय छात्रों, सबसे पहले तो मैं सभी उन छात्रों को बधाई दूंगा जिन्हे आज स्नातकोत्तर, सुपर स्पेशियलिटी एवं डॉक्टरेट की उपाधियां प्रदान की जा रही है। यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे आज इन सभी को अपनी शुभ कामनायें देने का मौका मिला है। मैं आशा करता हूँ कि आप सभी एक सफल एवं खुशहाल जीवन जीएगें और उसके साथ समाज, एवं देश के लिए गौरव भी प्राप्त करेंगे।

आज उत्तीर्ण छात्र न केवल मेडिसिन से संबंध रखते हैं बल्कि इसके अलावा, डेंटिस्ट्री, फार्मेसी, नर्सिंग एवं अन्य पैरामेडिकल विषयों से भी संबंध रखते हैं। यह सभी विषय एवं धारायें निवारक एवं उपचारक हेल्थ केयर के विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं एवं पूरक हैं। मैं आशा करता हूँ कि ये सभी पेशेवर व्यक्ति राजस्थान में हेल्थ केयर के विकास के द्वारा स्वास्थ्य के वांछित मानकों को शीघ्रति शीघ्र प्राप्त करने में अपना योगदान देंगे। आज, उपाधियां प्राप्त करने वालों में मैं सबसे ज्यादा महत्व एम.बी.बी.एस. एवं अन्य स्नातक स्तर की डिग्रीयों को दूंगा, क्योंकि एम.बी.बी.एस. की अच्छी ट्रेनिंग एक महत्वपूर्ण मेट्रिक्स प्रदान करती है, जिस पर स्पेशियलिटी एवं सुपर स्पेशियलिटी की इमारातें खडी की जा सकती है।

पिछले कुछ दशकों में जनता की मानसिकता के कारण स्नातकोत्तर डिग्रीयों की तरफ एक दौड़ का प्रचलन चला है जिससे जनरल प्रैक्टिशनर के स्तर एवं उनकी उपलब्धता में कमी आई है, जिससे स्वास्थ्य सेवाओं के स्तर में भी फरक पड़ा है। मैं आशा करता हूं कि हम अगले कुछ वर्षों में इस चलन को रिवर्स करने में सफल होंगे।

हमारा देश चिकित्सा के क्षेत्र में मौलिकता के आधार पर अन्वेषण करने में अग्रणी रहा है। सुश्रुत, धनवंतरि एवं चरक इसके ऐतिहासिक उदाहरण हैं। अब भी हमारे चिकित्सक विशेष करके शल्य चिकित्सक नई-नई विधियाँ विकसित करने में अपना कीर्तिमान स्थापित करते रहते हैं। इसके साथ-साथ यह भी सच है कि हमारे अधिकांश संस्थान मौलिकता का प्रशिक्षण देने अपने छात्रों में सोच डालने में उतने सफल नहीं हैं जितना कि वे हो सकते हैं। यह बात मेडिकल के अतिरिक्त अन्य धाराओं पर भी लागू होती है। आज, डिग्रियां हासिल करने वाले सभी छात्रों को याद दिलाना चाहूंगा कि उन्हे अपनी पूर्वजों से विरासत में मिले हुए जींस को सक्रिय करके पुनः गौरव हासिल करना है। शोध कोई अलग से विषय नहीं है, न ही उसके लिए बडी-बडी प्रयोगशालायें एवं उपकरण आवश्यक हैं पर ये एक चिंतन करने वाली प्रवृति है जिसके द्वारा हम एक बेहतर चिकित्सक एवं शिक्षक बन सकते हैं। इसके साथ मैं यह भी याद दिलाना चाहूंगा कि यह शोध न केवल फैशन के तौर पर होना चाहिए बल्कि मूल समस्या में जाकर उनका हल प्राप्त करने तक जारी रखना चाहिए।

राजस्थान भारत के गौरवमयी इतिहास का हिस्सा रहा है, यहां के राजा, प्रजा एवं स्वतंत्र भारत के बाद के चुनी हुई सरकारें अपने उच्च मापदण्डों के लिए जानी जाती रही हैं। यहां के मेडिकल कॉलेज, विश्वविद्यालय एवं अन्य विद्यालय अपने उच्च मानकों के लिए प्रसिद्धहैं, परन्तु इसकी भौगोलिक परिस्थितियाँ, फैली हुई आबादी और ग्रामीण आंचलों में चिकित्सकों एवं अन्य पेशेवर व्यक्तियों की कमी के कारण स्वास्थ्य के वांछित मानकों को प्राप्त करने में काफी कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है। आज, तकनीकी के विकास का लाभ साधारण जनता तक पहुंचे, उसके लिए बहुत मौलिक चिंतन की आवश्यकता है। सोचने का काम सिर्फ विशेषज्ञों एवं विद्यालयों में शिक्षकों का नहीं है पर उसके लिए राज्य

सरकार की स्वास्थ्य सेवाओं एवं नॉन–गवर्नमेन्ट सेक्टर को भी साथ लेने की बहुत जरूरत है। आज इस समारोह में उपस्थित सभी व्यक्तियों, विशेषकर उत्तीर्ण होने वाले नए पेशेवर व्यक्तियों को इस तरह के सहयोगी गठन बनाने चाहिए जो आपस में ताल–मेल कर सकें एवं आई.सी.एम.आर. एवं अन्य शोध संस्थाओं से भी भागीदारी करने में सफल हो सकें तभी स्थानीय रूप से प्रासंगिक समाधान ढूढंने में कामयाबीं मिलेगी। मैं आशा करता हूं कि आज का पावन अवसर सभी के मन में वांछित आत्मशक्ति जगाने में कामयाब होगा जिससे इस राज्य के स्वास्थ्य के क्षेत्र के मानकों को बेहतर करने में सफलता मिलेगी।

राजस्थान में मेडिकल कॉलेजों के द्वारा टेलीमेडिसिन, नई निदान एवं उपचार की विधियों के प्रयोग एवं विकास के बारे में मुझे काफी जानकारी है। मेरा मानना है कि पिछले इतिहास एवं आज की क्षमता को मद्देनजर रखते हुए हम कहीं आगे जा सकते हैं। अन्वेषण एवं उपचार व पब्लिक हेल्थ इंटरवेंशन के लिए प्रासंगिक कार्य के लिए वांछित एवं पूरक क्षमता राजस्थान के अन्य विश्वविद्यालयों, विद्यालयों, आई.सी.एम.आर., आई.सी.ए. आर., डी.आर.डी.ओ इत्यादि के संस्थानों में मौजूद है। संचार के माध्यम से देश के अन्य संस्थानों से भी सहभागिता करके राजस्थान के विद्यालय वांछित सफलता हासिल कर सकते हैं। इनोवेशन के लिए आई.सी.एम.आर., डी.एस.टी., डी.बी.टी., सी.एस.आई.आर, डी.आर. डी.ओ, आई.सी.ए.आर. एवं अन्य वैज्ञानिक एजेन्सियों (राजकीय, राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय) से सहयोग लिया जा सकता है। भारत सरकार के स्वास्थ्य शोध विभाग के द्वारा मेडिकल कॉलेज में मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च इकाइयां, वायरस रिसर्च नैदानिक प्रयोगशालायें एवं मॉडिल रूरल रिसर्च इकाई स्थापित की जा चुकी हैं। आई सी एम आर के जोधपुर स्थित मरूस्थलीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केंन्द्र के अन्तर्गत विभिन्न सहभागिता स्थापित की जा रही हैं। मैं आशा करता हूँ कि यह सभी तत्व राजस्थान में स्वास्थ्य के क्षेत्र में शोध, सेवाओं एवं शिक्षण को ऊँचा बनाने में मदद्गार साबित होंगे। राज्य सरकार के मार्गदर्शन एवं प्रयन्त स्वास्थ्य के वांछित मानकों को प्राप्त करने में सफल हों इसके लिए सरकारी, निजी एवं गैर सरकारी संस्थानों एवं पेशेवर व्यक्तियों के व्यक्तिगत योगदान आवश्यक हैं। आज डिग्री हासिल करने वाले सभी पेशेवर इस मुहिम में जुड जाएगें, इस आशा के साथ में संबोधन समाप्त करना चाहुँगा।

राजस्थान यूनिवर्सिटी ऑफ हेल्थ साइंसेज अपेक्षाकृत एक नया विश्वविद्यालय है पर इससे सम्बंधित महाविद्यालय अपने में दशकों का अनुभव संजोए हुए हैं। यह विश्वविद्यालय सभी प्रयत्नों को समंन्वित करके मेडिकल एवं सम्बंधित एवं अन्य धाराओं के विकास के लिए नये आयाम स्थापित करेगा, इसके लिए मैं अपनी ओर से और भारत सरकार की ओर से शुभकामनायें देता हूं।

इस अवसर पर मुझे आमंत्रित करने के लिए धन्यवाद,

जयहिंद